REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

झांसी महानगर के उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों में मादक द्रव्य व्यसन के कारण व प्रभावों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dr. Avdhesh Chandra Mishra[1] and Sandeep Duhan[2]
[1]Associate Professor, Dept. of Sociology, Atarra P.G.College, Atarra, Banda, U.P.
[2]Research Scholar, Dept. of Sociology, Bundelkhand University,Jhansi(U.P.)

सार

प्रस्तुत शोध पत्र झांसी नगर के विशेष संदर्भ में उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यनरत छात्रों में मादक द्रव्यों व्यसन का समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। यह पत्र अन्वेषणात्मक शोध पद्धति से संबंधित है जिसमें झांसी महानगर के उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले 300 विद्यार्थियों का उदेश्यपूर्ण विधि से निदर्शन लिया गया और साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उत्तरदाताओं में मादक द्रव्यों सेवन के कारण तथा मादक द्रव्यों सेवन के प्रभाव आदि का विश्लेषण किया गया। शोध के निष्कर्षों में यह पाया गया कि पिछले वर्षों में भारत में मादक द्रव्यों का सेवन बड़ा है और चोरी छिपे रूप से इनका विदेशों से आयात होता है। विश्वविद्यालयों के छात्राओं द्वारा मादक पदार्थों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है। प्रतियोगिता की कठिनता, सपनों का टकराव, पाठ्यक्रमों की नीरसता, अंदर ही अंदर कसकते-सिसकते तनाव के कारण युवा वर्ग तनाव से मुक्त तथा कल्पनाओं के स्वप्निल संसार में खोने की अदम्य लालसा के कारण नशे की शुरुआत करता है। मादक द्रव्य सेवन की प्रेरणा मित्रमंडली के बीच मिलती है। बहुधा अपने को अशिष्ट अनाड़ी एवं गंवार न समझ लिया जाए इसलिए भी प्रतिष्ठा के प्रतीक रूप में मादक द्रव्यों का सेवन किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की चकाचैंध में खोई हुए परिवारों में विभिन्न अवसरों पर नशा करना शिष्टाचार तथा जीवन शैली का प्रतीक बन गया है।

भूमिका

मादक द्रव्य वे रासायनिक पदार्थ है जो व्यक्ति के कार्यों एवं प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। इन्हें‘संवेदन मंदक औषधि भी कहा जाता है। अंग्रेजी के‘ड्रग्स‘ शब्द का अर्थ ‘औषधि‘ है जो चिकित्सक द्वारा रोगी को रोग निवारण हेतु दी जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ‘ड्रग्स‘ या औषधि एक ऐसा रसायन है जो व्यक्ति के मस्तिष्क एवं स्नायुमंडल को प्रभावित करता है। इस प्रकार मादक पदार्थ वे रसायन हैं जो व्यक्ति की मनः स्थिति, स्नायुमंडल, शरीर के कार्य, अनुभवजन्यता व चेतना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं जो व्यक्ति या समाज के लिए हानिकारक हो सकते हैं और जिसमें दुरुपयोग की क्षमता होती है। अवैध मादक पदार्थों का उपयोग या वैध मादक पदार्थों कादुरुपयोग मादक पदार्थों का दुष्प्रयोग कहलाता है जिससे शारीरिक व मानसिक हानि होती है।

मादक द्रव्य व्यसन शब्द का तात्पर्य है मादक पदार्थों पर शारीरिक निर्भरता। शारीरिक निर्भरता से तात्पर्य है कि मादक पदार्थों के निरंतर प्रयोग से शरीर उन पदार्थों की उपस्थिति से अपना सामंजस्य कर लेता है और यदि इनका प्रयोग नहीं किया जाता है तो शरीर को दर्द, बेचैनी और रुग्णता महसूस होती है। दूसरे शब्दों में मादक द्रव्य व्यसन वह दशा है जिसमें शरीर को कार्य करते रहने केलिए मादक पदार्थ प्रयोग की आवश्यकता महसूस होती है। यदि मादक पदार्थों का प्रयोग बंद कर दिया जाता है तो शरीर संचालन में बाधा पैदा होती है। व्यसन में मनोवैज्ञानिक निर्भरता पाई जाती है जिसे ‘आदी होना‘ भी कहा जाता है। इस प्रकार से मादक द्रव्य व्यसन का अर्थ है शरीर का मादक पदार्थों के विषैले प्रभावों पर इतना आश्रित हो जाना कि उसके बिना वह नहीं रह पाता।

शोध प्रविधि

उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों में मादक द्रव्य व्यसन का समाजशास्त्रीय अध्ययनहेतु शोधार्थी ने निम्न उद्देश्य निर्मित किए हैं-

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक परिवेश को जानना।
2. उत्तरदाताओं में मादक द्रव्य सेवन के कारणो को ज्ञात करना।
3. मादक द्रव्य सेवन से छात्रों एवं परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना।
4.मादक द्रव्य की लत छुड़ाने में संस्थागत एवं गैर संस्थागत उपायों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

निदर्शन व आँकड़े संग्रहण की तकनीक

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के अंतर्गत विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, आयुर्वेदिक कॉलेज, पॉलिटेक्निक कॉलेज, महाविद्यालयों के साथ ही फार्मेसी कालेजो को भी अध्ययन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से चयन किया है। इस प्रकार शोधार्थी ने 31 उच्च शिक्षण संस्थानों से अध्ययन के लिए छात्रों का चयन किया है। शोधार्थी ने अध्ययन हेतु कुल छात्रों या उत्तरदाताओं की संख्या 300 रखी है। इन उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक सूचनाओं संकलित की गई। कुछ जानकारी अवलोकन विधि के माध्यम से भी ज्ञात की गई है। द्वितीय स्रोतों के रूप में पूर्व अध्ययन, प्रकाशित लेखों, शोध पत्रों, शोध प्रतिवेदन, समाचार पत्रों इत्यादि से सूचनाओं का संकलन किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध प्रारूप का सहारा लिया गया है।

शोध परिणाम

इस शोध के दौरान निम्न परिणाम सामने आए:

मादक द्रव्य सेवन की प्रकृति

यह पाया गया कि सर्वाधिक 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रथम बार मादक द्रव्यों का सेवन मित्र दोस्तों संग किया था उन्होंने मादक द्रव्य सेवन करने के लिए किसी एक प्रकृति को उत्तरदायी नहीं माना बल्कि उनके अनुसार नियमित, अक्सर, कभी-कभी, अवसर विशेष पर, उपलब्ध होने पर, मन चलने पर, मित्रों के आमंत्रण पर, दबाव पड़ने पर एवं जेब में पैसे होने पर मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। सर्वाधिक 34.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे बियर, शराब एवं सिगरेट का सेवन करते हैं। वहीं दूसरे क्रम में ऐसे उत्तरदाताओं का प्रतिशत है जिनके अनुसार वे बीयर, शराब, सिगरेट व तंबाकू का सेवन करते हैं। 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे बियर, शराब, सिगरेट एवं भांग का सेवन करते हैं। मादक द्रव्यों का सेवन चूंकि बहुत सारे उत्तरदाता चोरी छिपे करते हैं इसलिएउन्होंने ऐसे मादक द्रव्यों को बताने से इनकार किया जिससे उनको खतरा हो इसलिए उन्होंने जानबूझकर ऐसे मादक पदार्थों को बताया है जिससे उनको किसी प्रकार का खतरा न हो। यद्यपि वे बहुत सारे गंभीर मादक पदार्थों का सेवन भी करते हैं। यह भी पाया गया कि सर्वाधिक 38.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे सारणी में वर्णित लगभग सभी स्थलों पर मादक द्रव्यों का सेवन कर सकते हैं। इसके लिए उन्होंने घर, मधुशाला, बीयर बार, क्लब, ढाबे, होटल, खुले स्थान, पार्क, गुप्त स्थान, हॉस्टल, दुकान, किराए के आवासीय कमरे, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन आदि सभी को स्थल के रूप में बताया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मादक द्रव्य सेवन करने का कोई एक निश्चित स्थान नहीं है वरन् वे अपनी सुविधानुसार सारणी में वर्णित स्थलों में से कहीं भी जा सकते हैं।

मादक द्रव्य सेवन के कारण

उत्तरदाताओं में मादक द्रव्य सेवन के कारणोंमें यह पाया गया कि सर्वाधिक 57.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे तनाव के कारण मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं, क 33.72 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे पारिवारिक एवं व्यक्तिगत तनाव, आर्थिक कठिनाई, गरीबी, सफलता न मिलने के कारण तथा कैरियर संबंधी संघर्ष के कारण जीवन में व्याप्ततनाव के कारण मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। 72.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे चिंता एवं कुंठा से निवारण हेतु मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं।40.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वे बेरोजगारी की वजह से भी मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। काफी कुछ उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वे कुछ सीमा तक बेरोजगारी की वजह से मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं।60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्यों की सहज उपलब्धता इनके सेवन का एक प्रमुख कारण है। दूसरे क्रम में ऐसे उत्तरदाताओं का प्रतिशत है जिन्होंने यह स्वीकार किया कि बहुत

सीमा तक मादक द्रव्यों की सहज उपलब्धता इनके सेवन का एक कारण है। 22.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे कामुकता उभारने के लिए भी मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं, 63.67 प्रतिशत उत्तरदाता मनोरंजन की दृष्टि से मादक द्रव्यो के सेवन करने को कुछ सीमा तक सही मानते हैं। जबकि 89.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वे चिकित्सकीय कारणों की वजह से भी मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करते। 82.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मादक द्रव्य व्यसन में मित्रों की भूमिका बहुत अधिक है43.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह बताया कि परिवार में प्रचलित नशाखोरी का उन पर प्रभाव पड़ा है जिसकी वजह से वे भी मादक द्रव्यों का सेवन करने लगे हैंऔर 53.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वे परिस्थितिवश भी मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। इसके साथ साथ 62.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि आधुनिकता एवं भौतिकता से उपजे चकाचैंध ने भी उन्हें मादक द्रव्य सेवन के लिए प्रेरित किया है। 6.67 प्रतिशत उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं की प्रेम में असफलता के कारण भी लोग मादक द्रव्यों का सेवन करने लगते हैंऔर सर्वाधिक 29.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अकेलापन, हीनभावना, पारिवारिक नियंत्रण का अभाव, बोरियत, पारिवारिक कलह, परिवार में उपेक्षा, आत्मीयता का अभाव, घर के बड़े सदस्यों का सदस्यों का नशे आदी होना तथा थकान और मायूसी से मुक्ति की चाह इत्यादि ऐसी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याएं हैं जिन्होंने उन्हें मादक द्रव्य सेवन हेतु प्रेरित किया हैमादक द्रव्य सेवन में मित्रमंडली नेभी प्रेरित किया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि 43.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अच्छे मित्रों का अभाव, मित्रों का दबाव, गलत संगत के प्रभाव, पॉप संगीत, दिखावे के लिए, मित्रों के साथ एक बार स्वाद लेने की चाह, मुक्त व स्वच्छंद जीवन, उत्सुकता व आनंद की प्राप्ति तथा कमजोर इच्छा शक्ति जैसी मित्रवत प्रवृत्तियों ने उन्हें मादक द्रव्य सेवन हेतु प्रेरित किया है37.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पाश्चात्य संस्कृति, फिल्मों का प्रभाव, आधुनिकता एवं आधुनिक जीवन शैली, शोर-शराब, भौतिकवादी चकाचैंध, विलासितापूर्ण जीवन तथा मादक पदार्थों की सहज उपलब्धता एवं फैशन इत्यादि ऐसी उभरती हुई नवीन प्रवृत्तियां है जिन्होंने उत्तरदाताओं को मादक द्रव्य सेवन केलिए प्रेरित किया है।

मादक द्रव्य सेवन से छात्रों एवं परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव

शोधार्थी ने मादक द्रव्यों के प्रभाव को बताते हुए स्पष्ट किया कि 44.33 प्रतिशत उत्तरदाता मादक द्रव्य सेवन की वजह से वे झूठ भी बोलते हैं।39.33 प्रतिशत मादक पदार्थों की पूर्ति हेतु कभी-कभी घर पर ही चोरी कर लेते हैं, 28.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि वे इनकी वजह से अपराधिक गतिविधियों में लिप्त नहीं होते, 47.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना कि इनकी वजह से उनकी आंखों की रोशनी प्रभावित नहीं होती जबकि 56.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक पदार्थों की वजह से उनके शरीर में से शिथिलता आने लगती है। 60.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक पदार्थों की वजह से उनके शरीर में आलस्य बना रहता है। 29.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि इनकी वजह से कभीकभी चिड़चिड़ापन में वृद्धि होती है, 54.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्यों की वजह से असमायोजन में वृद्धि होती है29.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्य सेवन की वजह से पारिवारिक कलह में वृद्धि होने के साथ ही अक्सर झगड़ा होना, छोटे भाई-बहनों का सही समाजीकरण न होना, दुव्यवहार तथा पड़ोस में निंदा होती है32 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्य सेवन के कारण परिवार का बजट गड़बड़ा जाता है, स्वयं को कर्ज लेना पड़ता है, मासिक आय से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती, घर एवं मुखिया का व्यवसाय प्रभावित होने के साथ ही माहौल भी तनावपूर्ण रहता है और ऋणग्रस्तता बढ़ती है जिससे गलत रास्ते भी अपनानेपड़ते हैं।25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्योंके सेवन की वजह से प्रतिष्ठा में कमी, जल्दी विश्वास न करना, परिचितों का अनजान बनने की कोशिश करना, परिवारजनों द्वारा ठीक से न बोलना तथा सत्यनिष्ठा में कमी आने के साथ ही मित्रगणों द्वारा भी जल्दी विश्वास न किया जाना आदि प्रभाव दिखाई देते हैं। 24.34 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्य सेवन की वजह से उनकी कार्यकुशलता, कार्यक्षमता प्रभावित होने के साथ ही अधिक देर तक बैठने में कठिनाई तथा स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है। इसके अलावा पढ़ने-लिखने में भी कठिनाई महसूस होती है, 40 प्रतिशत यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्य उनकी मनः स्थिति, स्नायुमंडल, अनुभवजन्यता व चेतना को प्रभावित करने के साथ ही शरीर के कार्यों को भी प्रभावित करते हैं।56.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यहमाना कि यदि वे मादक पदार्थों का सेवन नहीं करते तो उन्हें शरीर में दर्द, बेचैनी, मिलचाहट, ऐंठन, कमजोरी, आलस्य एवं निष्क्रियता की स्थिति महसूस होती है। आधे उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि मादक द्रव्यों का नशा कम होने पर कमजोरी, अनिद्रा, खिंचाव, दर्द एवं पुनः नशा करने का मन करता है। 38 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार कि मादक द्रव्य सेवन से युवा पीढ़ी मेंयौन स्वच्छंदता बढ़ी है, 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मादक द्रव्य सेवन से शारीरिक क्षमता का घटना, मानसिक दुर्बलता, अपराध की प्रवृत्ति का पनपना,

वैयक्तिक विघटन, शारीरिक कमजोरी, यौन अपराधों की ओर प्रवृत्त होना, मारपीट एवं चारित्रिक पतन जैसे लक्षणप्रदर्शित होने लगते हैं।28 प्रतिशत के अनुसार मादक द्रव्य सेवन से मानसिक दक्षता में कमी, जीवन के प्रति नीरसता का भाव, भावात्मक शक्ति का क्षीण होना, उत्तेजक भाषा का प्रयोग करना, सनकीपन, पागलपन, मानसिक दुर्बलता एवं शंकालु दृष्टि जैसे मानसिक प्रभाव उत्पन्न होने लगते हैं।32.33 प्रतिशत के अनुसार मादक द्रव्य सेवन से चर्म रोग, अपच, शरीर में सूजन, आंखों का लाल रहना तथा चक्कर आने जैसे प्रभाव दिखाई देने लगते हैं। 27.67 प्रतिशत के अनुसार आर्थिक जटिलताओं एवं18.67 प्रतिशत के अनुसार भावात्मक लगाव की कमी की क्षतिपूर्ति के रूप में भी वे नशे का सहारा लेते हैं।45 प्रतिशत के अनुसार मादक द्रव्य सेवन के विषय में उनकी माता-पिता को जानकारी नहीं है। ऐसे उत्तरदाता बहुत कम है जिनका यह कहना है की मादक द्रव्य सेवन के विषय में उनके माता-पिता को जानकारी है परंतु फिर भी इन उत्तरदाताओंमें ऐसे उत्तरदाता अधिक प्राप्त हुए है जो यह कहते हैं कि जानकारी होने पर ही अर्थात माता-पिता को यह पता चल जाए कि उनका पुत्र नशा किए हुए हैं तभी वह उन्हें डांटते हैं।

अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 80.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं को नशा मुक्ति केंद्र के विषय में जानकारी नहीं है। मात्र 03 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ही ड्रग ट्रीटमेंट सेंटर के विषय में जानकारी है। ये तीन प्रतिशत उत्तरदाता भी ड्रग ट्रीटमेंट सेंटर नहीं जोत॥ है। 86.33 प्रतिशत उत्तरदाता नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रमों में प्रतिभाग नहीं करते।94 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें गैस्सरकारी संस्थाओं द्वारा नशा मुक्ति के लिए प्रेरित नहीं किया गया।84 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि मादक द्रव्य सेवियों को पुलिस का भय नहीं होता॥ 53 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि मादक द्रव्य सेवन गैस्-कानूनी है और 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार मादक द्रव्य सेवन के फलस्वरूप उन्हें कभी पुलिस या कानून का सामना नहीं करना पड़ा॥

सुझाव

शोधार्थी ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किए हैं

- परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है। अतः पारिवारिक सदस्यों को छात्रों से निरंतर संपर्क की आवश्यकता है। छात्रों को परिवार में भावनात्मक लगाव अपेक्षित है। उनके जीवन में ऐसी परिस्थितियां न उत्पन्न होने दे जिससे वे मादक द्रव्य व्यसन की ओर प्रेरित हो सकें॥
- छात्रों को दिए जाने वाले जेब खर्च के विषय में अभिभावक निरंतर निगरानी रखें। आवश्यकता से अधिक धन भी नदें। यदि वे बहुत अमीर हैं तो भी उन्हें छात्रों को यह संदेश जरूर देना चाहिए कि वे पैसे का दुरुपयोग न करें।
- छात्रों को यह भी समझना चाहिए कि वे अच्छे मित्रों की संगत करें। वे ऐसे मित्र बनाएं जो उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएं। मार्ग से भटकाने वाले मित्रों से वे सावधान रहें। मादक पदार्थ छात्रों को सहज रूप में उपलब्ध न होने पाए इनके लिए कठोर कानूनी नियम होने चाहिए॥
- छात्रों में कठिन परिस्थितियों एवं संघर्ष से लड़ने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए न कि वे निराश होकर मादक द्रव्यों का सेवन करने लगे।
- समाज में विचलित करने वाली जो भी प्रवृत्तियां हैं उनसे छात्रों को सावधान एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है॥छात्र अपने जीवन को संयमित बनाएं, कल्पना लोक में न उड़े, उच्च आकांक्षाओं को न पालें,जमीन से जुड़ना सीखें जिससे उनका भविष्य निखर सके॥
- व्यक्ति, परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों की भी यह जिम्मेदारी है कि यदि उन्हें यह पता हो की छात्रा मादक द्रव्य व्यसनी है तो वह उसकी काउंसलिंग करें और उनको सकारात्मक संदेश दें॥मादक द्रव्यों व्यसन से पढ़ने वाले कुप्रभाव की जानकारी सभी छात्रों को देनी चाहिए॥
- सरकारी एवं गैस्सरकारी स्तर पर उपलब्ध नशा मुक्ति सुविधाओं की जानकारी समस्त छात्रों को होनी चाहिए॥ संभव हो तो सभी स्तर के पाठ्यक्रमों में इसका एक संक्षिप्त परिचय भी होना चाहिए॥
- जो सरकारी एजेंसियां मादक द्रव नियंत्रण के लिए क्रियाशील हैं उनकी जानकारी भी आमजन एवं छात्रों को दी जानी चाहिए॥

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Ahuja Ram -Social Problems in India, Rawat Publication, Jaipur, 2002.
- Becker Howard S.- The Outsider, Free Press, New York, 1963.
- Peele Stanton- Love and Addiction, Tapelinger, New York, 1975.
- श्रीवास्तव ए. एल. एवं गुप्ता अंजुला-मादक द्रव्य व्यसन एवं युवा वर्ग, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,वाराणसी, 1990. पृष्ठ 5.
- खान अकबर- नगरीय युवाओं में बढ़ता मादक द्रव्य व्यसन, समाज वैज्ञानिकी, सितंबर 2016, गौरव प्रकाशन, रीवा, मध्य प्रदेश, पृष्ठ 48-49.
- गुहा कल्पना - दुर्व्यव्यसन की समस्या-एक गंभीर चुनौती, समाज वैज्ञानिकी, मार्च 2012, गौरव प्रकाशन, रीवा, मध्य प्रदेश, पृष्ठ 68.
- गोयल द्वारिका प्रसाद- भारतीय सामाजिक समस्याएं, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, 1970.
- चौबे राजेंद्र कुमार - छात्रों में नशे की प्रवृत्ति कारण एवं निदान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005. पृष्ठ 102.
- जायसवाल राजेंद्र- विघटन का समाजशास्त्र, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी लखनऊ,1979.
- ड्रग्स पर शिकंजा- अमर उजाला, 14.03.2024, कानपुर संस्करण, पृष्ठ 16.
- द इलस्ट्रेटेड वीकली, जून 26 जुलाई 2, 1993.
- दीक्षित डी. के.- विद्यार्थी और मादक पदार्थ, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1998. पृष्ठ 35.
- दास गुप्ता- इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ड्रग एब्यूज रिपोर्ट, कोलकाता,1992.
- नेभिनानी नरेश - स्कूल और कॉलेज के छात्रों में मादक पदार्थों से संबंधित ज्ञान, जर्मन जनरल ऑफ साइकाइट्रिक, 2013.
- नशे की कारोबार पर प्रहार, अमर उजाला, 01.03.2024, कानपुर संस्करण, पृष्ठ 12.
- पांडेय व्ही. के.- मादक द्रव्य व्यसन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, समाज वैज्ञानिकी, गौरव प्रकाशन, रीवा, मध्य प्रदेश, 2003.
- मणि दिनेश - तंबाकू रहित जीवन की ओर, योजना, मई 2009, प्रकाशन विभाग, योजना भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ 53.
- बघेल डी.एस.- भारतीय सामाजिक समस्याएं, पुष्पराज प्रकाशन, रीवा, मध्य प्रदेश, 1984.
- मदन जी. आर.- मदात्यय और नशा, भारतीय सामाजिक समस्याएं, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1987.
- राय चंद्रकुमार - भारतीय सामाजिक समस्याएं-मादक पदार्थों का दुरुपयोग, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009. पृष्ठ 187-210.
- राजोरा सुरेश चंद्र समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएं, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2006, पृष्ठ 217.
- राय विजय कुमार- युवाओं में नशाखोरी एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, योजना, जून 2009, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ 53.
- लवानिया एम. एम.एवं शशि के.जैन- दुर्व्यवसन की समस्या, भारत में सामाजिक समस्याएं, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2001.
- सिंह एम. एन.- युवा वर्ग नशे की गिरफ्त में पूर्वी उत्तर प्रदेश पर आधारित समाजवैज्ञानिक अध्ययन, समाज वैज्ञानिकी, गौरव प्रकाशन, रीवा, मध्य प्रदेश, 2003. पृष्ठ 04.